2.6.2 कला के क्षेत्र में

मोना लीसा

चित्रकला पुनर्जागरण काल में सबसे अधिक विकास चित्रकला के क्षेत्र में हुआ। 15वीं शताब्दी तक चित्रकला न केवल धार्मिक विषयों पर सीमित थी परंतु रंगों और विषयों का चयन भी सीमित था। उस काल के चित्रों में उदासी एवं एकरसता झलकती है। परंतु पुनर्जागरण काल में कालाकार की अपनी स्वतंत्र पहचान हो गई। इस समय तक आर्थिक समृद्धि एवं धर्मनिरपेक्ष भाव की आंशिक विजय के कारण कला बहुत हद तक धर्म की सेवा से मुक्त हो गई। पुनर्जागरण काल के कलाकारों ने कला कों जीवन का रूप समझा । उन्होने प्रकाशिकी और ज्यामिति का अध्ययन किया और चित्रों में प्रक्षेपों का उपयोग प्रांरभ किया। मानव के हाव भावों की आंतरिक व्यवस्था को समझने के लिए शरीर–रचना विज्ञान के अध्ययन पर जोड़ दिया गया। इंद्रिय सुख प्राप्त करना कला का न्यायोचित उद्देश्य हो गया। पुनर्जागरण कला के प्रांरभिक चित्रकारों में जिऐटो महत्वपूर्ण है। इन्होनें पंरपरागत शैली से हटकर मानव एवं प्रकृति पर अनेक चित्र चित्रित किए। जियेटों को चित्रकला का जन्मदाता कहा जाता है। इस काल में लियोनार्दो द विंची (द लास्त सपर, मोनालिसा,) माइकल एंजेलो (लास्ट जजमेंट) और राफेल के चित्रों मे पुनर्जागरण चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई।

लियोनार्डो द विंची (1452–1516) – फ्लोरेंस का रहने वाला लियोनार्डो द विंची इतावली पुनर्जागरण की महानतम हस्तियों में से एक था। वह एक महान चित्रकार और वैज्ञानिक, इंजीनियर और आविष्कारक, वास्तुविद और मूर्तिकार, संगीतज्ञ और कवि था। लियोनार्डो द विंची चित्रकला को कला का मुख्या रुप मानता था। वह मानता था कि उनकी सहायता से मनुष्य संसार का परिचय प्राप्त करता है। सारा संसार उसके चित्र 'मोनालिसा' से परिचित है, जो एक युवा नगरवासिनी का रुपचित्र है। चित्रकार इसमें न केवल बाहरी सादृश्य को ही, बल्कि युवती के आंतरिक व्यक्तित्व, चरित्र और मिजाज को भी पूरी सार्थकता और सटीकता के साथ प्रेषित कर सका है।

2.6.3 स्थापत्य एवं मूर्तिकला

डेविड

पुनर्जागरण चेतना के विकास के साथ कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुआ। इस काल में स्थापत्य एवं मूर्तिकला एक दूसरे से स्वतंत्र होकर अलग–अलग विधा के रूप में स्थापित हुई। पुनर्जागरण चेतना के प्रभाव में गोथिक स्थापात्य का अवसान हो गया। स्थापात्य की नई शैलियों का विकास पहले इटली मे और बाद में यूरोप के अन्य भागों में हुआ। इस युग का प्रमुख मूर्तिकार डोनाटेलों तथा गिबर्ती था।

2.6.4 दर्शन

बुद्धिवादी विकास ने व्यापारियों और दर्शनिकों को प्रोत्साहित किया। इटली के दार्शनिकों ने विश्व को यथार्थ से जोड़ा और प्रकृति को सुव्यवस्थित दैविक नियमों से नियंत्रित बताया। पुनर्जागरण काल के मानववादियों ने

अरस्तु की जगह सिसरो को अपना आदर्श माना और नैतिक दर्शन पर बल दिया। आगे बहुत से दार्शनिक प्लेटोवादी हो गए और फलोरेंस मे प्लेटोनिक सोसाइटी की स्थापना हुई। मैकियावेली एक यथार्थवादी राजनीतिक दार्शनिक था जिसने अपनी पुस्तक 'द प्रिंस' और 'डिसकोर्सेज' में अपने विचार व्यक्त किए हैं। उसने मध्ययुग की आधारभूत राजनीतिक अवधारणा पर चोट की। उसने राज्य की अवधारणा आधुनिक रुप में प्रस्तुत की । उत्तरी यूरोप में इरासमस एवं बेकन महत्वपूर्ण विचारक हुए। इरासमस ने चर्च के धार्मिक आडम्बर पर चोट की और बेकन ने आगमनात्मक दर्शन पर जोर दिया।

2.6.5 विज्ञान

पुनर्जागरण के काल में विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इस वैज्ञानिक विकास के प्रमुख कारण थे–

1. प्रोटेस्टेंट धर्म ने मनुष्य को धार्मिक नियंत्रण से मुक्त कर स्वतंत्र रुप से विचार करने का अवसर प्रदान किया ।

2. इस युग के विचारकों का मानना था कि ज्ञान प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका अन्वेषण, अध्ययन–अध्ययापन है न कि महज चिंतन करना फ्रांसिस बेकन ने कहा था ज्ञान की प्राप्ति केवल प्रयोग करने से ही हो सकती है। बेकन के अनुसार जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, उसे स्वयं से प्रश्न करना चाहिए। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में कॉपरनिकस ने एक क्रांति ला दी जब उसने घोषणा की कि पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है और वह सूर्य की परिक्रमा करती है। जर्मन वैज्ञानिक केपलर द्वारा गणित की सहायता से ग्रह द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने की किया की पुष्टि की गई। आइजेक न्यूटेन ने यह साबित किया कि सभी खगोलीय पिंड गुरूत्वाकर्षण के अन्तर्गत यात्रा करते है। मानव शरीर और रक्त–संचारण के बारे में भी कई अविष्कार हुए। इस प्रकार वैज्ञानिक मनोवृति ने दीर्धकाल से स्वीकृत विचारों और प्रथाओं की आलोचनात्मक परीक्षा की और मनुष्य को कला, व्यवसाय, शिक्षा और जीवन के अनेक क्षेत्रों से नये विचारो के संबध में परीक्षण करने के लिए प्रेरित किया।

2.6.6 भौगोलिक खोंजें

सामुद्रिक व्यापार का एकमात्र मार्ग भूमध्य सागर था। लेकिन, अब लोग व्यापार के दूसरे सामुद्रिक मार्गों की खोज में लग गए। कोलम्बस के द्वारा 1492 में दुनिया (New World) का पता लगाया गया। उसने इसे भारत समझकर इसका नाम वेस्टइंडीज रखा परंतु, यह अमेरिका था। पुर्तगाली नाविक डियाज और वास्कोडिगामा के नाम भी भौगोलिक खोजों में महत्त्वपूर्ण है। डियाज ने उत्तमाशा अंतरीप (Cape of Good Hope) का पता लगाया। 1519 ई. में मैगलेन ने संपूर्ण विश्व की परिक्रमा की। इस तरह भौगोलिक खोजों की वजह से सागरीय व्यापार (Thalasic trade) महासागरीय व्यापार (Oceanic trade) में परिवर्तित हो गया।

2.6.7 अर्थजगत पर प्रभाव

अर्थव्यवस्था का समाज की धुरी बन जाना पुनर्जागरण की एक अन्यतम उपलब्धि रही है। पुनर्जागरण से पूर्व तक उत्पादन प्रक्रिया की दृष्टि से 'कृषि' तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से धार्मिक संस्थाओं को सर्वोच्चता प्राप्त थी। कृषि से इतर गतिविधियाँ गौण महत्त्व रखती थी। मध्यकाल में कामगारों के लिए गिल्ड व्यवस्था प्रचलित थी जिसमें लम्बी समयावधि के दौरान अनेक दोष समाहित हो गये थे पुनर्जागरण के पश्चात् इन 'गिल्ड' संस्थाओं का स्थान कारखाना पद्धति लेने लगी जिसकी ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन आये। इन परिवर्तनों के प्रति राजव्यवस्था का समर्थनकारी रुख और धार्मिक जंजीरों के ढीले पड़ने से पूंजीवादी व्यवस्था के विकास को गति प्राप्त हुई। नगरीय जीवन, बैंकिंग व्यवस्था, स्टॉक कम्पनियों और मध्यवर्गीय जीवन शैली के विकास और श्रम के बिकाऊ बन जाने से

सामाजिक जीवन में अर्थजगत की प्रतिष्ठा स्थापित हुई और यहीं से अर्थव्यवस्था समाज और राजनीति की अनुवर्ती होने के स्थान पर समाज और राजनीति के निर्धारक की भूमिका का निर्वहन करने लगीं।

2.6.8 सामाजिक जीवन पर

पुनर्जागरण से 'विशिष्ट जन केन्द्रित' समाज व्यवस्था 'सामान्य जन केन्द्रित' व्यवस्था की ओर उन्मुख हुई। समाज संरचना के अनुक्रम में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह रहा कि पादरी व सामंती वर्ग जो कि अनुत्पादक तथा विलासी हो गया था। उसके स्थान पर मध्यवर्ग वरीय स्थान पर आ गया। इस दौरान शक्ति समीकरण यह रहा कि मध्यवर्ग तथा केन्द्रीय सत्ता एक पक्ष, वहीं सामंत व पादरी वर्ग दूसरे पक्ष के रूप में प्रतिस्पर्द्धी बनकर उभरे। धर्म केन्द्रित तथा समाज केन्द्रित चिंतन शैली के स्थान पर व्यक्तिवादी चिंतन को अपेक्षित महत्त्व मिला। धर्म के प्रभाव में कमी आने से अंधविश्वास, भाग्यवादी और पारलौकिक चिंतन में समाज का विश्वास कम होता गया। इन सभी घटनाओं व प्रवृत्तियों से मध्यकालीन समाज का ढाँचा चरमराने लगा और आधुनिक समाज की नींव तैयार हुई।

2.7 पुनर्जागरण का महत्व एवं परिणाम

हम समग्र रूप से पुनर्जागरण का विश्लेषण करे तो कुछ बातें स्पष्ट हो जाती है। पुनर्जागरण ने प्राचीन प्रेरणाओं पर आधारित एक ऐसा प्रयोग आंरभ किया जो उस युग की परिस्थितियों से सांमजस्य कर सका। साथ ही नितांत मौलिक एवं प्रगतिशील दिशाएँ भी तलाश सका।

2.7.1 भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास

पुनर्जागरण ने मनुष्या को उसकी महत्ता से अवगत कराया। यह कहा जा सकता है कि पुनर्जागरण मूलतः मध्यकाल के ईश्वर केन्द्रित सभ्यता से आधुनिक युग के मानव केन्द्रित सभ्यता की ओर एक परिवर्तन था। पुनर्जागरण चेतना से उत्पन्न व्यक्तिवाद ने यूरोपीय मानस को आंदोलित कर दिया। आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिवाद